

ज्योतिर्गमय

संस्कृतनिष्ठ बाल-मासिक पत्रिका

विषय: - जीवनं किम् ? / यह जीवन क्या है ?



- आशिता चौहान १०वीं



आत्मानं विद्धि

अंक ६० जुलाई २०२५ आषाढ मास, विक्रम संवत् २०८२

मानव भारती देहरादून - विद्यालयस्य प्रयासः

मन के जीते जीत ही जीवन है...



मैं कौन हूँ मैं क्या हूँ हमें निरन्तर अपने आप से पूछना चाहिए। जीवन एक उस खड़े पेड़ की तरह है जो प्रकृति के तत्वों पर पक्षियों और राहगीरों का सामना करता है और यह अकेले रह रहे आदमी की अपेक्षा अधिक सुंदर होता है। पेड़ फल देता है, पेड़ छाया देता है परन्तु किसी से कुछ अपेक्षा नहीं रखता फिर भी पेड़ अपने आप में खुश हैं। हमें पेड़ से यह सीख लेनी चाहिए कि एक दूसरे की मदद कर हम अपना जीवन खुशहाल बना सकते हैं। मनुष्य की जिंदगी एक अनूठा और व्यक्तिगत अनुभव है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक चलता है। यह एक सफर है जो विभिन्न उतार-चढ़ावों, संघर्षों और खुशियों से भरा होता है जीवन में कभी भी हार नहीं माननी चाहिए।

महर्षि पतंजलि के अनुसार **योगश्चित्तवृत्ति निरोधः** - अर्थात् योग के अभ्यास से मन और विचार की चंचलता को कम करके एकाग्रता और शांति प्राप्त की जा सकती है। योग हमारे आन्तरिक एवं बाहरी शरीर को मजबूत बनाता है। योग के द्वारा ही हम मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। योग एक पुरानी प्रचलित पद्धति है जो पहले से ही चली आ रही है जैसा कि भगवान श्रीकृष्ण जी अर्जुन को युद्ध के समय समझाते हैं कि हे अर्जुन आप योग में स्थित होकर अपने कर्म को करो फल की चिंता मत करो फल तुम्हें स्वयं ही प्राप्त होगा कर्म पर ही तुम्हारा अधिकार है। इसीलिए जीवन में कर्म को ही प्रधान माना गया है मनुष्य का जीवन बहुत ही मुश्किलों से मिलता है हमें अपना जीवन हंसी खुशी व्यतीत करना चाहिए।

"ओम् असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्मा अमृतं गमय"

हे प्रभु असत्य से सत्य की ओर अन्धकार से प्रकाश की ओर मृत्यु से अमरता की ओर मेरी गति हो। वस्तुतः मन के जीते जीत ही जीवन है।

- खुशी, पंचम, तक्षशिला सदन

प्रेम से परिपूर्ण सकारात्मक जीवन ही खुशहाल जीवन है...

जीवन एक अनमोल उपहार है, जो हमें प्रकृति ने दिया है। यह जीवन एक यात्रा है, जिसमें हमें कई उतार-चढ़ाव से गुजरना पड़ता है। जीवन में सुख और दुःख दोनों आते हैं, लेकिन हमें इन दोनों को स्वीकार करना चाहिए। जीवन का उद्देश्य केवल जीना नहीं है, बल्कि इसे सार्थक बनाना है। हमें अपने जीवन में कुछ ऐसा करना चाहिए, जो हमें संतुष्टि और खुशी दे। जीवन में मित्रता, प्रेम, और परिवार का महत्व बहुत अधिक है। ये रिश्ते हमें जीवन की कठिनाइयों से लड़ने की ताकत देते हैं। जीवन एक अवसर है, जिसे हमें सही तरीके से उपयोग करना चाहिए। हमें अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत करनी चाहिए और अपने सपनों को पूरा करने के लिए प्रयासरत रहना चाहिए। जीवन में सफलता और असफलता दोनों आती हैं, लेकिन हमें हार नहीं माननी चाहिए। जीवन एक अनमोल उपहार है, जिसे हमें सार्थक और खुशहाल बनाने का प्रयास करना चाहिए। हमें अपने जीवन को सकारात्मकता और प्रेम से भरना चाहिए और दूसरों के लिए अच्छा करने का प्रयास करना चाहिए।

- नयना, १० वीं

जीवनं सर्वदा सुखाय...

सोहन नाम का एक लड़का रामपुर गांव में रहता था। वह IAS परीक्षा की तैयारी कर रहा था। कई बार निरंतर प्रयास करने के पश्चात भी वह असफल हो गया। उसने हार मान ली और वह हमेशा दुःखी रहने लगा था कि मैं जिंदगी में आगे जाकर कुछ नहीं बन सकता। मैं जिंदगी में असफल हो चुका हूँ। जब कुछ दिनों तक उसके माता-पिता ने उसे देखा तो उन्हें अत्यंत बुरा लगा और उन्होंने सोहन को सही पथ पर लाने का निश्चय किया और उसका मार्गदर्शन किया।

सोहन से कहा बेटा एक इंसान को जीवन में अनेकों कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, इन कठिनाइयों से ही एक इंसान मजबूत बनता है और उसे कभी भी कोई हरा नहीं पता। कोई भी चीज अगर हमें अत्यंत आसानी से मिल जाएगी तो वह प्रसन्नता जो उस चीज को पाने के बाद मिलती है उसे अलग ही मजे का अनुभव नहीं कर पाओगे।

जीवन एक ही तो होता है, एक ही तो अवसर मिला है इसी में इतना नाम करके जाओ की मरने के बाद भी सब तुम्हें याद रखें। इसलिए बेटा समय आ गया है खूब परिश्रम करो जो तुम्हारी इच्छा है वह बनो। आखिर जीवन एक ही तो है कुछ गम कुछ खुशियों से खिली हुई। इन बातों को सुनने के पश्चात सोहन प्रेरित हो गया। उसने अपनी प्रकृति को देखा और बहुत मेहनत करने के बाद कुछ ऐसे आविष्कार बनाए जिन्होंने सभी वैज्ञानिकों का दिल जीत लिया। आगे जाकर वह एक बहुत बड़ा वैज्ञानिक बना और उसने अपनी प्रकृति के लिए बहुत कार्य किया।

- अन्विता मिश्रा, कक्षा सातवीं
ज्ञान भारती स्कूल, साकेत, नई दिल्ली

सूक्तिमालिका - जीवनम्

नैतिक शिक्षा तथा जीवन-मूल्यों की सूक्तियां

१. अपि सर्व जीवितमल्पमेव - कठोपनिषद्
सारा जीवन भी (अन्तकाल की तुलना में)
थोड़ा ही है।

२. जीवन् भद्राणि पश्यति - विराट पर्व
महाभारत

मनुष्य जीता रहता है, तो बहुत सी भलाइयाँ
देखता है।

३. जीविताशा बलीयसी - भागवतम्
जीने की आशा बड़ी बलवती होती है।

४. मुहुर्तं ज्वलितं श्रेयो न च धूमायितं चिरम्
- उद्योग पर्व, महाभारत

यदि मनुष्य का जीवन थोड़ी देर के लिए
भी तेजस्वितापूर्ण हो तो वह अच्छा परंतु
यदि बहुत दिनों तक भी धूएँ की तरह निस्तेज
हो तो ऐसा जीवन व्यतीत करना ठीक नहीं
होता है।

५. जीवितं मरणात् श्रेयो जीवन् धर्म
मवाप्नुयात् - शान्तिपर्व महाभारत

मरण से जीना उत्तम है क्योंकि मनुष्य जीवित
रहता है तो धर्म आचरण करता है।

६. द्रव्याणि सन्ततिश्चैव सर्वं भवति जीवितः
- शान्तिपर्व महाभारत

मनुष्य जब जीवित रहता है तब धन संपत्ति
एवं संतान आदि सब कुछ प्राप्त होता है।

७. नात्मच्छन्देन भूतानां जीवितं मरणं तथा
- उद्योग पर्व महाभारत

प्राणियों का जीवन अथवा मरण कुछ भी
अपनी इच्छा अनुसार नहीं होता है।

८. यस्मिन् जीवति जीवन्ति बहवः स तु
जीवति - हितोपदेश

जिसके जीने से बहुत लोगों को जीवन प्राप्त
हो उसी का जीवन सफल है।

९. सर्व जीवद्भिराप्यते - कथासरित्सागर
आदमी जीवित रहता है, तो सब कुछ पाता है।

१०. स जीवति गुणा यस्य धर्मो यस्य स
जीवति - चाणक्य नीति

जिस मनुष्य में गुण और धर्म दोनों हों, उसी
का जीवन जीवन है।

नैतिक शिक्षा - श्लोकः

अमानित्वमदम्भित्वम् अहिंसा क्षान्तिरार्जवम् ।
आचार्योपासनं शौचं स्थैर्यमात्मविनिग्रहः ॥

- श्रीमद्भगवद्गीता- १३/०७

अर्थात् - श्रेष्ठता का अभिमान न होना, दम्भाचरण का अभाव, किसी भी प्राणी को किसी प्रकार भी न सताना, क्षमाभाव, मन-वाणी आदि की सरलता, श्रद्धा-भक्ति सहित गुरु की सेवा, बाहर-भीतर की शुद्धि अन्तःकरण की स्थिरता और मन-इन्द्रियों सहित शरीर का निग्रह, इन बातों पर मनुष्य को बार-बार विचार कर इसे आत्मसात करने का अभ्यास करना चाहिए।

क्रोधः सुदुर्जयः शत्रुः लोभो व्याधिरनन्तकः ।
सर्वभूतहितः साधुः असाधुर्निर्दयः स्मृतः ॥

- महाभारत, वनपर्व - ३१३/९२

अर्थात् - क्रोध मनुष्य का दुर्जय शत्रु है, लोभ प्राणी का अपरिमित व्याधि है, सभी प्राणियों का हित चाहनेवाला साधु (सज्जन) पुरुष है और निर्दयी असाधु (दुर्जन) पुरुष होता है।

अचोद्यमानानि यथा पुष्पाणि च फलानि च ।
स्वकाले नातिवर्तन्ते तथा कर्म पुराकृतम् । ।

- सुभाषित रत्नाकर

अर्थात् - जैसे फूल और फल बिना किसी की प्रेरणा से स्वतः समय पर प्रकट हो जाते हैं और समय का अतिक्रमण नहीं करते, उसी प्रकार पहले किये कर्म भी यथासमय ही अपने फल (अच्छे या बुरे) देते हैं। अर्थात् कर्मों का फल अनिवार्य रूप से प्राप्त होता है।

तत्वज्ञस्य तृणं शास्त्रं वीरस्य समरस्तृणम् ।
विरक्तस्य तृणं नारी निस्पृहस्य नृपास्तृणम् । ।

- नराभरण - १२

अर्थात् - तत्वज्ञानी व्यक्ति के लिए शास्त्र तिनके के समान होता है, वीर पुरुष के लिए युद्ध तिनके के समान होता है, विरक्त व्यक्ति के लिए नारी तिनके के समान होता है और निःस्पृह व्यक्ति के लिए राजा तिनके के समान होता है।

मधुरं संस्कृतम् - क्रिया- अभ्यासः (वर्तमान कालः)

याति = जाता है।
आयाति = आता है।
हसति = हँसता है।
पठति = पढ़ता है।
लिखति = लिखता है।
गायति = गाता है।
नृत्यति = नाचता है।
खादति = खाता है।
खेलति = खेलता है।
चलति = चलता है।
पिबति = पीता है।
मिलति = मिलता है।
नश्यति = नष्ट होता है।
पतति = गिरता है।
रटति = रटता है।
सिंचति = सींचता है।
शपति = शाप देता है।
भवति = होता है।



फलति = फलता है।
वहति = वहन करता है।
तरति = तैरता है।
धावति = दौड़ता है।
गर्जति = गरजता है।
रोदिति = रोता है।
करोति = करता है।
रक्षति = रक्षा करता है।
विकसति = खिलता है।
भ्रमति = भ्रमण करता है।
दहति = दहन करता है।
ददाति = देता है।
कथयति = कहता है।
उदयति = उदित होता है।
निन्दति = निन्दा करता है।
प्रविशति = प्रवेश करता है।
पूरयति = पूर्ण करता है।
अभिलषति = अभिलाषा करता है।



रूप वो भवानी का देवी अहिल्या है...



**(३१ मई देवी अहिल्याबाई होलकर की ३०० वीं
जयंती की पूर्णता पर प्रस्तुत कविता...)**

देवी का स्वरूप जो, करुणा का रूप जो,
धर्म प्रतिरूप जो, त्याग अनुरूप जो,
शांति दीप पुंज जो, धैर्य का है कुंज जो,
निर्बलों का बल है जो, न्याय का है गूंज जो।
रूप वो भवानी का देवी अहिल्या है।

विश्व का कल्याण जो, स्वदेश का उत्थान जो,
सभ्यता का मान जो, संस्कृति का सम्मान जो,
मालवा का स्वाभिमान जो, मराठा का गुमान जो,
हिंदुत्व का अभिमान और स्त्रियों में महान जो।
रूप वो भवानी का देवी अहिल्या है।

अग्नि सी ऊर्जावान जो, सूर्य कीर्तिमान जो,
रानी दयावान जो, गुणों का बखान जो,
पर्वत सी धैर्यवान जो, हर युग का गौरवगान जो,
स्वत्व की पहचान जो, ज्ञान से धनवान जो।
रूप वो भवानी का देवी अहिल्या है।

शिव की उपासिका सनातन को साधिका जो,
मुश्किलों से लड़ती थी रानी वो चंडिका जो,
दुश्मन भी डरते थे, देवी वो कालिका जो,
जीवन की पालिका समाज की सुधारिका जो।
रूप वो भवानी का देवी अहिल्या है।

शिष्या मल्हार की परिभाषा उपकार की जो,
थाती संजोया जिसने पुनरुत्थान संसार की जो,
आचरण की शुद्ध जो, सरलतम व्यवहार की जो,
मां भारती के आंचल की अनुपम उपहार जो।
रूप वो भवानी का देवी अहिल्या है।

पुण्यश्लोकावाहिनी वसुंधरा को तारिणी जो,
गंगा सी निर्मल पावनी, दुर्गा सी देवी दामिनी जो,
जगत की लोकमाता, सीता सी सुहासिनी जो,
आत्मा की शुद्धतम देव पथगामिनी जो।
रूप वो भवानी का देवी अहिल्या है।

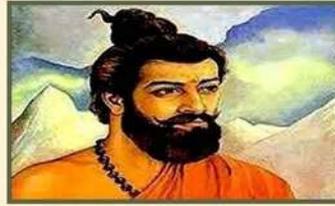
- कवयित्री अपराजिता ' उन्मुक्त '
हरिद्वार उत्तराखंड

हमारा मूल्यवान जीवन...

कुछ चीजें जो बढ़ सकती हैं और कई गुना तक बदलाव होता है, उसे जीवन माना जाता है। हम जीवन की कई किस्मों से घिरे हुए हैं, लेकिन उनमें से मानव जीवन इन सबमें प्रमुख और सबसे अधिक गुणों वाला है। इस ग्रह पर मनुष्य में अन्य जीवन को प्रभावित करने की शक्ति है। जीवन की सुंदरता का असली महत्व यह है कि यह दूसरों के लिए कितना मूल्य रखती है। दूसरों की मदद करने में बिताया गया जीवन, एकांत में बिताए गए जीवन से काफी अधिक मूल्यवान होता है। हर एक जीवन महत्वपूर्ण है और यह आपस में एक दूसरे से जुड़े होते हैं। प्रत्येक प्रजाति, चाहे वो मनुष्य हो, पशु हो या पक्षी इस दुनिया में अपने उद्देश्य की पूर्ति करते हैं और सभी एक दूसरे को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। भले ही वो चाहे एक छोटी प्रजाति की हो और इस ग्रह से लुप्त हो जाती है लेकिन यह दूसरे जीवों को भी प्रभावित करती है। इसलिए हम सभी के जीवन के लिए यही हित में है कि हम सभी जीवन प्रजाती के रूपों को महत्व दें और ग्रह के प्रत्येक जीवों को भी बराबर महत्व दें और उसकी रक्षा करें।

- ज्योत्सना ८ ब

**“ पुनरपि जननं पुनरपि मरणं, पुनरपि जननी जठरे शयनम् ।
इह संसारे बहुदुस्तारे, कृपयाऽपारे पाहि मुरारे
भजगोविन्दं भजगोविन्दं, गोविन्दं भजमूढमते । ”**



कपिल मुनि

कपिल मुनि सांख्य दर्शन के प्रवर्तक व सूत्रों के रचयिता थे। इन्होंने ही चेतना की शक्ति व त्रिगुणात्मक प्रकृति के विषय में महत्वपूर्ण सूत्र भारत को दिए।



महर्षि भारद्वाज

महर्षि भारद्वाज ने सदियों पहले वैमानिक शास्त्र की रचना की थी, जिसमें एक ग्रह से दूसरे ग्रह व एक दुनिया से दूसरी दुनिया में ले जाने के बारे में लिखा गया है। ऋषि भारद्वाज ने यन्त्र-सर्वस्व नामक ग्रन्थ लिखा था, जिसमें उच्च और निम्न स्तर पर विचरने वाले विमानों के लिए विविध धातुओं के निर्माण का वर्णन मिलता है।

अनमोल उपहार है जीवन ...

जीवन एक अनमोल और अनंत यात्रा है, जिसमें सुख-दुख, हर्ष-विषाद, उतार-चढ़ाव जैसे अनेक रंग भरे हैं। यह एक ऐसा सफर है, जिसमें हम नए अनुभव प्राप्त करते हैं, संबंध बनाते हैं, और स्वयं को विकसित करते हैं। जीवन में हमें अपने लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयास करना होता है, और चुनौतियों का सामना करते हुए हम और मजबूत बनते हैं। जीवन की सार्थकता हमारे द्वारा किए गए अच्छे कार्यों, अपनों के प्रति प्रेम और समाज के प्रति योगदान में है। यह एक अवसर है, जिसमें हम अपने सपनों को पूरा कर सकते हैं और अपने जीवन को सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ा सकते हैं। जीवन में समय का सदुपयोग, सही निर्णय लेना, और अपने मूल्यों के अनुसार जीना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

जीवन की यात्रा में हमें अपने अनुभवों से सीखना, दूसरों की मदद करना, और जीवन के हर पल को भरपूर जीना चाहिए। यह एक अनमोल उपहार है, जिसे हमें पूरी तरह से जीने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं, लेकिन सकारात्मक दृष्टिकोण और दृढ़ संकल्प के साथ हम हर चुनौती का सामना कर सकते हैं और अपने जीवन को सफल बना सकते हैं।

- वान्या गैरोला, ८ स

" जीवनं किम् - यह जीवन क्या है " ?

{जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में समय का सदुपयोग, नित्य स्वाध्याय तथा कर्तव्यकर्म करना ही जीवन है...}



हम कौन थे, क्या हो गए, और क्या होंगे अभी।
आओ विचारें आज मिलकर ये समस्यायें सभी ॥

आयुषः क्षण एकोऽपि न लभ्यः कल्पकोटिभिः ।
तस्मात् सर्वप्रयत्नेन क्षणमेकं न लंघयेत् ॥



अर्थात् करोड़ों रुपए खर्च करें तब भी आयु का बीता हुआ एक क्षण भी फिर लौट नहीं सकता। अतः ऐसा प्रयत्न करना चाहिए कि जीवन का एक क्षण भी बेकार न बीते। अर्थात् हमेशा कोई ना कोई उपयोगी काम करते रहना चाहिए। (उपयोगी काम करना ही जीवन है)

- नीतिसंग्रह

आत्मविश्वास, साहस, समय का सदुपयोग, स्वाध्याय, कर्तव्यकर्म, सफलता, सदा संचित रहना, दुःख को अपने पास ना आने देना स्वयं को ऊंचा उठाने का प्रयत्न करना अपने अंदर इतना आत्मविश्वास पैदा करना कि लोग आपको अपना मसीहा मानने लगे सफलता का सबसे बड़ा रहस्य है और यही जीवन है। आत्मविश्वास के साथ मौलिकता का होना बहुत जरूरी है, मौलिकता ही आत्मविश्वास की जड़ है। जो लोग सफलता की सीढ़ियां चढ़ना चाहते हैं उनके लिए अति आवश्यक है कि वे अपने मन में दृढ़ विश्वास पैदा करें और मौलिकता के मार्ग से दूर न जाएं, अपने आप पर विश्वास रखें, अपने आत्मविश्वास को बनाए रखेंगे तो ही लोग आपकी जय जयकार करेंगे। इसके सहारे ही आप ऊंचा उठ सकते हैं, आपकी सफलता के द्वारा भी खुल सकते हैं, आपके पास बुद्धि है, शक्ति रुपी आत्मा है फिर आप क्यों दूसरे लोगों की ओर देखते रहते हैं, क्यों दूसरों से अपने को छोटा समझते हैं, यह तो मानवता का ही अपमान है कि इंसान हर जगह हर स्थान पर दूसरों से ही कुछ न कुछ मांगता रहता है। असफलता नीचे जाने का मार्ग है उसे मत चुनिए। वक्त के साथ न चलने वाले जिंदगी के दौर में सबसे पीछे रह जाते हैं। तीव्र बुद्धि, उच्च कोटि के विचार, नई मौलिक सूझबूझ, ये ही ऐसे गुण हैं जो इंसान को ऊंचा उठाते हैं। ऐसे लोग ही उन्नति करते हैं। आलसी व्यक्ति जीवन में कभी तरक्की नहीं करता है।

जीवन में आगे बढ़ने वाला प्रतीक्षा नहीं करता है। वह काम करता है, आगे बढ़ता है, लगन हो तो मंजिल आसान हो जाती है, ईश्वर जिस किसी मानव को शिक्षा देना चाहता है तो वह उसे धन के विद्यालय में ना भेज कर संकटों की विद्यालय में भेजता है। उसे दुःख और चिंताओं के विद्यालय में भेज देता है। गरीबी के कारण ही उसके अंदर के छुपे हुए गुण बाहर आते हैं। ऐसे गुण जिनकी किसी ने कल्पना भी नहीं की होती है। यह बात सदा याद रखो कि गरीबी ही मानव जाति का महान विश्वविद्यालय रहा है। इस विश्वविद्यालय से निकले अधिकतर लोग महान बने हैं। इनमें से कई राजनीतिक नेता, महान कलाकार, संगीतकार, चित्रकार, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति और भी बहुत कुछ बनकर उभरे हैं। जीवन में सफलता पाने की इच्छा अवश्य रखनी चाहिए। आदतों को आत्मसात करना चाहिए।

प्रतिदिन अपना दिन जल्दी शुरू करें, अपने लिए समय निकालें, रोजाना छोटे-छोटे लक्ष्य तय करें, समाधान पर ध्यान दें, बदलाव को स्वीकार करें, असफलता से सबक लें, जीवन में सफलता और खुशी पाना छोटी-छोटी नियमित आदतों का नतीजा है, जिन्हें हम समय के साथ बनाते हैं। लेकिन बहुत कम लोग ही इसके लिए कदम उठाते हैं। जीवन में हंसना बहुत आवश्यक है क्योंकि जब आप हंसते हैं तो निरोग रहते हैं, जब आप हंसते हैं तो खुश रहते हैं और जब आप हंसते हैं तो जीवन की ऊंचाई को छूते हैं। इसलिए हंसते रहना चाहिए, आपकी सफलता का सबसे बड़ा रहस्य है कि आपका दृढ़ आत्मविश्वास अंदर से हो, अंतःकरण से हो, चिंता चिंता समान है अतः चिंता नहीं करनी चाहिए। आपकी शान आपके व्यक्तित्व का आईना है। अपनी शान को हमेशा बरकरार रखें, ध्यान रखें कि कोई भी हो पर व्यक्ति का व्यवहार ही उसकी सफलता का परिचायक है। जीवन में सच्चा सुख ही आत्मा को शांति प्रदान करता है। उत्साही व्यक्ति दूसरे के मन में भी जोश भर देता है अतः आपके मन में निरंतर उत्साह होना चाहिए। उत्साह की कमी नहीं होनी चाहिए, पहले असफलता के कर्म को पहचानें और फिर उसके लिए प्रयास करें। जीवन में चिड़चिड़ापन भी एक रोग बन जाता है, अतः इस चिड़चिड़ापन से अवश्य बचना चाहिए। दया और भावुकता का आपस में कोई मेल नहीं है, हमें सबसे पहले यही प्रयत्न करने होंगे कि अपनी भावनाओं का परित्याग करें अथवा उन पर काबू पाएं और भावनाओं पर अंकुश लगाते हुए दया के सहारे आगे बढ़ते रहें। इससे आपको भी लाभ होगा और आपसे मिलने वाले को भी। इस बात से भी कभी भी इनकार नहीं किया जा सकता की भावुकता मानव जीवन का एक अंग है परंतु इसका अधिक होना भी लाभदायक नहीं है। मैं तो आपसे खुली भाषा में कहूंगा कि यदि आप अपने जीवन को ऊंचा उठाना चाहते हैं तो भावुकता को स्वाभिमान के रूप में अपना साथी बनाकर रखें। यह आपके लिए अत्यंत लाभदायक और अच्छी सहायक सिद्ध होगी। भाग्य के भरोसे मंजिल नहीं मिलती, हमें कर्तव्य कर्म करते रहना चाहिए, क्योंकि कर्म करने वाला ही व्यक्ति आगे बढ़ता है और लक्ष्य पता है। नाम वेही पाते हैं जो कुछ कर दिखाते हैं। सफलता उन्हीं के कदम चूमती है जो अपनी धुन के पक्के होते हैं। सन्त कबीर दास कहते हैं कि :-

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में परलय होगी, बहुरि करेगा कब ॥



अर्थात् जो काम कल करना है उसे आज ही कर लेना चाहिए और जो काम आज करना है उसे अभी ही कर लेना चाहिए, क्योंकि पल भर में सब कुछ खत्म हो जाएगा। फिर कब करोगे ? यह कबीरदास जी का एक प्रसिद्ध दोहा है जो समय की महत्ता और आलस्य से बचने के लिए प्रेरित करता है।

हाथ से निकला वक्त वापस नहीं लौटता, अतः समय का भी सदुपयोग अवश्य करना चाहिए खासकर पढ़ने वाले बच्चों को सफलता प्राप्ति के लिए कटिबद्ध रहना चाहिए। आगे वेही बढ़ते हैं जो पीछे लौट कर रास्ते स्वयं अपने हाथों से बंद कर देते हैं। जीवन की जीत उन्हीं के हाथों में है जो निडर व साहसी होते हैं। चंचल मन को व्यर्थ मत भटकने दें। संकट ही आपका सच्चा परीक्षक होता है। उचित तौर से इस्तेमाल की गई अक्ल तलवार की धार से तेज काम करती है, असंभव काम वेही कर पाते हैं जिनमें अटूट विश्वास होता है। अपने ऊपर विश्वास होता है, साहस से कठिन काम भी सरल हो जाता है, आत्मविश्वासी अपनी राह स्वयं बनाता है, अन्य लोगों को प्रभावित कैसे करें जीवन में इसका भी प्रयास करते रहना चाहिए। असली वक्त वही माना जाता है जो दूसरों का दिल जीत लेता है, और दूसरों की बातों को सुनता है। उठो अपने भाग्य को बदल डालो, अपना कार्य स्वयं करो, अपने कर्तव्य कर्म को पहचानो। जो बच्चे बचपन से अपना काम स्वयं नहीं करते वे आगे चलकर असफल हो जाते हैं। सफलता मिलना सरल नहीं है, लेकिन यदि हम अपना कर्तव्य कर्म करते हैं तो एक दिन अवश्य सफल हो जाते हैं। वाद विवाद से व्यक्ति की योग्यता का पता चलता है।

खुद को किसी से कम ना समझें, क्योंकि आप किसी से कम नहीं हैं। ईश्वर ने ही आपको भी बनाया है। हाँ कभी घमंड नहीं करना चाहिए, प्रेरणा से उन्नति का रास्ता मिलता है। जीवन का ज्ञान किताबों से कम अनुभव से ज्यादा मिलता है, अतः बड़े लोगों के साथ रहें, बड़े लोगों के साथ घूमें और अनुभव प्राप्त करें। आगे बढ़ने के लिए पीछे नहीं देखते, समय को तत्काल पकड़ोगे तो तुम्हारी विजय को कौन रोक सकता है। मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता स्वयं होता है। वह स्वयं ही अपना भाग्य बनाता है तथा स्वयं ही बिगाड़ता है। जो व्यक्ति अपनी सफलता के लिए भाग्य या दूसरों पर आश्रित होते हैं वे सदा असफलता का मुंह देखते हैं क्योंकि उन्हें अपनी आत्मशक्ति एवं सामर्थ्य का ज्ञान नहीं होता है। जो व्यक्ति अपनी आत्मशक्ति, मेहनत और आत्मविश्वास को सीढ़ी बनाकर अपने उद्देश्य की ओर बढ़ते हैं सफलता सदा उन्हीं के कदम चूमती है, क्योंकि ऐसे व्यक्ति केवल अपने कर्म एवं आत्मविश्वास पर आश्रित होते हैं, भाग्य या किसी अन्य व्यक्ति पर नहीं। विश्व प्रसिद्ध विचारकों की पुस्तकों को अवश्य पढ़नी चाहिए। आपकी अच्छी वाणी भी आपकी शोभा बढ़ाती है। भारतीय शास्त्रों के अनुसार उस आदमी का जीवन सफल है जिसमें कुछ गुण हों तथा जो धर्म के मार्ग पर चलता हो परंतु जिस आदमी में ना कोई गुण हो और ना वह धर्म पर चलता हो तो उसका जीवन सर्वथा निष्फल है, बिल्कुल बेकार है। नीतिशतकम् के अनुसार उसी का जन्म सफल है जिसके कारण वंश की उन्नति होती है, तरक्की होती है, वैसे तो इस परिवर्तनशील संसार में कौन नहीं मारता है, कौन नहीं जन्म लेता है ? परन्तु उसी का जीवन सफल है जिसके जीवन में धर्म, गुण, स्वाध्याय, कर्तव्य कर्म, समय का सदुपयोग और भारतीय जीवन होता है, वस्तुतः यही जीवन है।

गीता कहती है.....

**नियतं कुरु कर्म त्वं कर्म ज्यायो ह्यकर्मणः ।
शरीरयात्रापि च ते न प्रसिद्ध्येदकर्मणः ॥**

तू शास्त्र विहित कर्तव्य कर्म कर क्योंकि कर्म न करने की अपेक्षा कर्म करना श्रेष्ठ है तथा कर्म न करने से तेरा शरीर निर्वाह भी नहीं सिद्ध होगा। (नित्य शास्त्र विहित कर्तव्य कर्म करना ही जीवन है)

- श्रीमद्भगवद्गीता ३/८

निर्झर कहता है, बढ़े चलो ! देखो मत पीछे मुड़ कर ,
यौवन कहता है, बढ़े चलो ! सोचो मत होगा क्या चल कर?

चलना है, केवल चलना है ! जीवन चलता ही रहता है !
रुक जाना है मर जाना ही, निर्झर यह झड़ कर कहता है।

यह जीवन क्या है ? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है,
सुख-दुःख के दोनों तीरों से चल रहा राह मनमानी है ॥

- डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी

जीवन चलता ही रहता है ...

यह जीवन क्या है ? निर्झर है, मस्ती ही इसका पानी है,
सुख-दुःख के दोनों तीरों से चल रहा राह मनमानी है ।

कब फूटा गिरि के अंतर से ? किस अंचल से उतरा नीचे ?
किस घाटी से बह कर आया समतल में अपने को खींचे ?

निर्झर में गति है, जीवन है, वह आगे बढ़ता जाता है ,
धुन एक सिर्फ है चलने की, अपनी मस्ती में गाता है ।

बाधा के रोड़ों से लड़ता, वन के पेड़ों से टकराता,
बढ़ता चट्टानों पर चढ़ता, चलता यौवन से मदमाता।

लहरें उठती हैं, गिरती हैं; नाविक तट पर पछताता है।
तब यौवन बढ़ता है आगे, निर्झर बढ़ता ही जाता है।

निर्झर कहता है, बढ़े चलो ! देखो मत पीछे मुड़ कर ,
यौवन कहता है, बढ़े चलो ! सोचो मत होगा क्या चल कर?

चलना है, केवल चलना है ! जीवन चलता ही रहता है !
रुक जाना है मर जाना ही, निर्झर यह झड़ कर कहता है ॥

- आरसी प्रसाद सिंह

बुद्ध का बुद्धत्व ही जीवन की यात्रा है ...

(बुद्ध पूर्णिमा/ वैशाख पूर्णिमा/१२ मई विशेष)

जन्म संबोधि और निर्वाण- बुद्ध के जीवन की ये तीन महत्वपूर्ण घटनाएं वैशाख पूर्णिमा के दिन हुईं। यह सिद्धार्थ के बुद्धत्व तक की जीवन यात्रा है, जिसमें उन्होंने जनकल्याण के लिए महानिर्वाण को भी त्याग दिया।

बुद्ध का हृदय करुणाशील था, जैसे उनके हृदय में करुणा का सागर हिलोरें ले रहा हो। यह करुणा ही उनके सूत्रों को मानवता के कल्याण का प्रेरक बनती है। उनका उद्देश्य केवल बाहरी दुनिया को बदलना नहीं था बल्कि अंदर की स्थिति को बाहरी जगत से एकीकृत करना था। बुद्ध का एक प्रसिद्ध धम्मसूत्र सूत्र है - मनुष्य का जीवित रहना भी दुर्लभ है, सद्धर्म का श्रवण करना भी दुर्लभ है और बूढ़ों का उत्पन्न होना भी दुर्लभ है। मनुष्य होना इतना आसान नहीं है, इतना सरल नहीं है। हालांकि हमें यह लगता है कि डेढ़ अरब से अधिक जनसंख्या अकेले भारत की ही है। इसका मतलब मानव जन्म सुलभ है। तभी तो सब पैदा हो गए। पर बुद्ध ने कुछ सोच समझ कर ही ऐसा कहा होगा, क्योंकि बुद्ध ऐसे व्यक्ति हैं जो सिर्फ बोलने के लिए कोई बात नहीं बोलते बल्कि विज्ञान, तर्क, बुद्धि, विवेक आदि का उपयोग करने के बाद ही मुख से वचन निकालते हैं। उनके कहने का अभिप्राय यह है कि सिर्फ मनुष्य का शरीर पाया तो क्या पाया, अगर मानवता नहीं पाई तो मनुष्य कहां से हुआ !

मनुष्य शरीर कीमती है निश्चित ही कीमती है लेकिन मनुष्य का शरीर मिल गया अब और कुछ नहीं चाहिए ऐसा नहीं है। जैसे गुलाब का बीज तुम्हारे हाथ में हो, लेकिन उस बीज को जब तक तुम धरती में नहीं डालो और वह पौधा ना बने उसमें फूल न लगे तब तक आप उस बीज से निकलने वाले फूलों की खुशबू नहीं ले सकते। तुम खाली बीज को सूँघो तो क्या खुशबू आएगी ? इसी तरह से मनुष्य का शरीर भी एक बीज की तरह है। इस बीज को अगर साधना की भूमि में डाल दिया, ज्ञान के जल से सींच दिया, तप के द्वारा इसको पकने दिया तो फिर मनुष्यता का जन्म हो जाएगा। अन्यथा तो बीज रूप से पैदा हुए और बीज रूप से मर गए, फूल बन ही नहीं पाए।

बुद्ध पूर्णिमा वही दिन है जब बुद्ध का जन्म हुआ था। एक बड़ी अद्भुत बात है कि पूर्णमासी के दिन बुद्ध का जन्म हुआ और पूर्णमासी के ही दिन इनको संबोधि भी प्राप्त हुई फिर इसी पूर्णमासी पर ही इनका निर्वाण भी हुआ। यह एक बड़ी विलक्षण बात है कि जिस दिन जन्म हुआ उसी दिन ज्ञान भी और पूर्णमासी को ही निर्वाण भी प्राप्त हुए। मेरी दृष्टि में बुद्ध पूर्णिमा का दिन बहुत विशेष है। भले ही बुद्ध आज हमारे बीच नहीं हैं, भले ही तथागत शरीर से श्वास लेते हुए चलते-फिरते हुए दिखते नहीं हैं। २५०० वर्षों का अंतर पड़ गया है। २५०० साल पहले बुद्ध चले गए, विदा हो गए, लेकिन इसके बावजूद आज के दिन बुद्धत्व की ऊर्जा का विस्फोट और वितरण अब भी होता है। पहले राजा महाराजा के जन्मदिन के अवसर पर कई लोगों को फांसी तक माफ हो जाती थी, उपहार दिए जाते थे, बुद्ध तो सम्राटों के भी सम्राट थे, राजाओं के भी राजा थे। बुद्ध पूर्णिमा का दिन सिर्फ उनका जन्मोत्सव ही नहीं उनका मरणोत्सव भी है। उनका ज्ञानोत्सव भी है और उनका संबोधि उत्सव भी है।

बुद्ध के सूत्रों में ही एक सूत्र है जिसमें आपने कहा कि बुद्धि की स्थिति से तो देवता भी ईर्ष्या करते हैं। संबोधि देवताओं को भी उपलब्ध नहीं है, उनकी संबोधि से जुड़ी एक घटना है- कहा जाता है कि बुद्ध इतनी गहरी लीन हो जाएंगे तो विश्व का कल्याण कैसे होगा ? सब देवता उपस्थित हुए और आकर विनती करते हैं कि है बुद्धदेव !

आप आप लीन न होइए, आप जागृत रहिए और जो कुछ आपको मिला है, उस ज्ञान को सारे विश्व को दीजिए। देवताओं की प्रार्थना सुनकर बुद्ध ने कहा कि जिसे खोजना होगा वह खोज ही लेगा। जैसे मैंने बिना किसी गुरु के खोज लिया, ऐसे ही दूसरे भी खोज लेंगे, फिर देवों ने कहा कि सब बुद्ध नहीं हैं, सब सिद्धार्थ नहीं हैं, इसलिए है बुद्ध आप लीन न होइए। आप अभी निर्वाण में मत जाइए।

अंततः देवों की प्रार्थना को बुद्ध ने स्वीकार किया और बुद्ध ने अपने दाएं हाथ से धरती की धरती को स्पर्श किया और कहा हे धरती ! तू इस बात की साक्षी रहना की बुद्ध ने महानिर्वाण को अस्वीकार किया, ताकि जगत का कल्याण हो सके। आज भी अगर कोई चाहे तो अपने ध्यानस्थ मन के साथ बुद्ध से जुड़ सकता है, क्योंकि बुद्ध ने कहा था कि मैं शरीर तो छोड़ रहा हूँ लेकिन मेरे शरीर के बाद होने वाले साधकों के लिए, उनकी सहायता करने के लिए मैं रुका रहूँगा। इसलिए बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर मौन रहें, ध्यान करें, एकाग्रचित्त हों, अपने चित्त का शोध करें, तप करें, अपने भीतर में बुद्धत्व को प्राप्त हो जाऊँ, मुझको परम ज्ञान उपलब्ध हो जाए, यह प्रार्थना करें।

बुद्ध शरणं गच्छामि.. - गुरु माँ आनन्दमूर्ति

"पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि जननी जठरे शयनम्" - जीवनम्

जीवन एक जटिल और व्यक्तिगत अनुभव है जो जन्म से मृत्यु तक की यात्रा है। इसमें विभिन्न अनुभव, रिश्ते, और सीखने के अवसर शामिल हैं। जीवन का उद्देश्य व्यक्ति की मान्यताओं, मूल्यों, और लक्ष्यों पर निर्भर करता है, जैसे कि खुशी, संतुष्टि, व्यक्तिगत विकास, या धर्म और सेवा के प्रति समर्पण। यह एक अद्वितीय और व्यक्तिगत अनुभव है। हमारे जीवन में वातावरण बेहद महत्वपूर्ण है। यह हमें वह सब कुछ प्रदान करता है जिसकी हमें जीने के लिए आवश्यकता होती है, जैसे कि हवा, पानी, भोजन, और रहने की जगह। यह हमारे स्वास्थ्य और भलाई को भी प्रभावित करता है।

इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं :-

प्राणवायु और जल की आपूर्ति: - वातावरण हमें शुद्ध वायु (ऑक्सीजन) देता है, जो हमारे जीवन के लिए अनिवार्य है। साथ ही, यह जलचक्र के माध्यम से हमें ताजा पानी उपलब्ध कराता है।

खाद्य संसाधन: पेड़-पौधे, पशु और मछलियाँ - सभी पर्यावरण का हिस्सा हैं और ये हमारी भोजन की ज़रूरतों को पूरा करते हैं।

जलवायु और मौसम: वातावरण पृथ्वी की जलवायु को संतुलित रखता है, जिससे खेती, बारिश और मौसम के अन्य पहलू नियंत्रित होते हैं।

प्राकृतिक संसाधन: हम ईंधन, खनिज, लकड़ी, औषधियाँ आदि भी वातावरण से ही प्राप्त करते हैं।

जीव-जंतुओं का आवास: वातावरण ही विभिन्न जीवों और वनस्पतियों का प्राकृतिक आवास है, जिससे जैव विविधता बनी रहती है।

मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव: स्वच्छ वातावरण हमारे स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है, जबकि प्रदूषित वातावरण बीमारियों का कारण बनता है।

इसलिए वातावरण का संरक्षण करना न केवल हमारी वर्तमान ज़रूरतों के लिए, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के भविष्य के लिए भी अत्यंत आवश्यक है।

- सृष्टि शर्मा ८ब



" सम्मानित किए गए मानव भारती के निदेशक तथा शिक्षक "

उद्गार साहित्यिक एवं सामाजिक मंच देहरादून के अध्यक्ष गीतकार श्री शिव मोहन सिंह के द्वारा मानव भारती देहरादून के निदेशक डॉ. हिमांशु शेखर तथा डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी (संस्कृत शिक्षक) सम्मानित किए गए। श्री सिंह ने सम्मान स्वरूप अंगवस्त्र के साथ नव लोकार्पित पुस्तक "लोकमंगल का गीत सर्जक शिव मोहन सिंह" भेंट किया।

"लोकमंगल का गीत सर्जक- शिव मोहन सिंह " पुस्तक का लोकार्पण हिन्दी भवन में किया गया था। इस आयोजन के मुख्य अतिथि श्री अनिल रतूड़ी (पूर्व पुलिस महानिदेशक उत्तराखंड, वर्तमान आयुक्त, सेवा का अधिकार आयोग उत्तराखंड) विशिष्ट अतिथि राधा रतूड़ी (पूर्व मुख्य सचिव उत्तराखंड, वर्तमान मुख्य सूचना आयुक्त उत्तराखंड) अध्यक्षता प्रो. सुधा रानी पाण्डेय (पूर्व कुलपति संस्कृत विश्वविद्यालय हरिद्वार) ने की। सारस्वत अतिथि के रूप में प्रो. रामविनय सिंह, पद्मश्री डॉ. बी के एस संजय और पुस्तक के संपादक नवगीत के पुरोध असीम शुक्ल ने समारोह की शोभा बढ़ाई। कार्यक्रम का संचालन उद्गार साहित्यिक संस्था के महामंत्री पवन शर्मा ने की। इस पुस्तक में वरिष्ठ गीतकार शिव मोहन सिंह के कृतित्व पर विद्वत साहित्यकारों के द्वारा की गई समीक्षा, आलेख और शुभकामनाओं का संकलन किया गया है। साथ ही गीतकार के द्वारा सृजित खूबसूरत कुछ रचनाओं को भी सम्मिलित किया गया है, पुस्तक सुन्दर कलेवर के साथ पठनीय तथा संग्रहणीय है।

श्री शिवमोहन सिंह उत्तराखंड पेयजल निगम से सेवानिवृत्त सिविल अभियंता हैं और वर्तमान में देहरादून उत्तराखंड में रहकर निरंतर गतिशील साहित्य सृजन, काव्य चिंतन, मनन में लगे रहते हैं। आपकी अनेक कृतियाँ साहित्य जगत को प्रोत्साहित और प्रकाशित करने में लगी हुई हैं, जिनमें जागृति, मन हुआ मधुमास, ताल किनारे, ज्यों कुहरे में धूप, प्रधान कृतियाँ हैं। साहित्यिक एवं सामाजिक सरोकार के धनी गीतकार श्री शिव मोहन सिंह अनेक सम्मानों से सम्मानित हैं और निरंतर कहीं न कहीं उनका साहित्यिक सम्मान होता रहता है। साहित्य साधक तथा काव्य धर्म के धनी के प्रति कृतज्ञता- ज्ञापन का एक सकारात्मक प्रयास है "लोकमंगल का गीत सर्जक श्री शिव मोहन सिंह"। इस अवसर पर "ज्योतिर्गमय" संस्कृतनिष्ठ बाल-मासिक पत्रिका तथा मानव भारती देहरादून आपको बधाई के साथ मंगलमय शुभकामनाएं प्रदान करता है।



मानव भारती स्कूल देहरादून द्वारा मातृदिवस पर " संस्कृत सूक्तिलेखन प्रतियोगिता " का आयोजन... मातृदेवो भव - माँ को देवता समझो, माँ का सम्मान करो



Manava Bharati School

D- Block, Nehru Colony, Dehradun 248001 Uttarakhand

E-mail.com:- hr@mbs.ac.in, Website:- www.mbs.ac.in

Phone- 0135-2669306, 8171465265, (Dr. Anantmani Trivedi - 7351351098)

मानव भारती स्कूल देहरादून के लिए प्रसारित। केवल निजी प्रसार के लिए।

संपादक - डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी, डिजाइन - विशाल लोधा



आत्मानं विद्धि